Research Article

शोध ज्ञानान्तिका (Shodh Gyanantika)
वर्ष 14 अंक 2 अप्रैल 2026: 186–189

ISSN 2277-582X
DOI: 10.66302/sg.vol.14.issue.02.31
Website: www.shodhgyanantika.com

महिला नेतृत्व एवं समावेशी विकास : विकसित भारत की कुंजी

श्री जयललिता

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा

***Corresponding Author Email**-jaylalita9694@gmail.com

Received : March 2026
Revised : April 2026
Accepted : April 2026
Published : April 2026

HOW TO CITE THIS ARTICLE:

जयललिता, श्री. (2026). महिला नेतृत्व एवं समावेशी विकास : विकसित भारत की कुंजी. शोध ज्ञानान्तिका, 14(2), 186-189.

कॉपीराइट © 2026 लेखक(गण)। इसे D.A.V. (P.G.) कॉलेज, आर्य समाज रोड, मुज़फ़्फ़रनगर (U.P.)-250101 के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा प्रकाशित किया गया है। यह एक ओपन एक्सेस लेख है जिसे क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC BY 4.0) (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/) की शर्तों के तहत वितरित किया गया है। यह लाइसेंस किसी भी माध्यम में बिना किसी रोक-टोक के इस्तेमाल, वितरण और पुनरुत्पादन की अनुमति देता है, बशर्ते मूल काम का उचित संदर्भ दिया जाए।

सारांश

यह शोध पत्र 'महिला नेतृत्व एवं समावेशी विकास' की अवधारणा का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है और विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की प्राप्ति में इसकी केन्द्रीय भूमिका को स्पष्ट करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा डिजिटल क्षेत्रों में बढती भागीदारी किस प्रकार समावेशी विकास को सशक्त बनाती है। शोध में विशेष रूप से केन्द्रीय बजट 2026–27 में प्रस्तुत महिला सशक्तिकरण नीतियों और कार्यक्रमों का विश्लेषण किया गया है, जिनमें लखपति दीदी, SHE-MARTS]STEM शिक्षा, महिला उद्यमिता तथा डिजिटल नेतृत्व जैसे प्रमुख आयाम शामिल हैं।

यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों जैसे– सरकारी रिपोर्ट, नीति दस्तावेज, और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रकाशनों पर आधारित है तथा गुणात्मक पद्धति के माध्यम से विषय का विश्लेषण करता है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि महिला सशक्तिकरण केवल सामाजिक न्याय का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह आर्थिक विकास और राष्ट्रीय प्रगति का भी एक महत्वपूर्ण कारक है। हालांकि, लैंगिक असमानता, शिक्षा की कमी और संसाधनों तक सीमित पहुँच जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। अतः यह आवश्यक है कि नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन और सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाकर महिलाओं की पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित की जाए, जिससे एक समावेशी और सशक्त विकसित भारत का निर्माण संभव हो सके।

मुख्य शब्द – महिला सशक्तिकरण, समावेशी विकास, विकसित भारत 2047, STEM, डिजिटल नेतृत्व, उद्यमिता

परिचय

'यदि आप एक पुरूष को शिक्षित करते हैं तो एक व्यक्ति शिक्षित होता है,
लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। (भारत सरकार, 2026)

– डॉ.भीमराव अम्बेडकर

यह कथन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि महिलाओं का सशक्तिकरण केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे समाज के समग्रत विकास से जुड़ा हुआ है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति उसके मानव संसाधनों के समुचित उपयोग पर निर्भर करती है, जिसमें महिलाओं की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत जैसे विविधतापूर्ण और विकासशील देश में 'विकसित भारत 2047"का लक्ष्य केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और समावेशी विकास को भी समान महत्व दिया गया है। समावेशी विकास का तात्पर्य यह है कि समाज के सभी वर्गों– विशेष रूप से महिलाओं, युवाओं और वंचित समूहों को विकास की मुख्यधारा में शामिल किया जाए। (महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, 2025)

इस संदर्भ में महिला नेतृत्व एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरकर सामने आया है, जो न केवल निर्णय–निर्माण की प्रक्रिया को अधिक संवेदनशील और न्यायसंगत बनाता है, बल्कि आर्थिक

और सामाजिक विकास को भी गति प्रदान करता है। हाल के वर्षों में भारत सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अनेक पहलें की गई हैं, जिनमें स्वयं सहायता समूह (SHGs), लखपति दीदी योजना, महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन, STEM शिक्षा में भागीदारी और डिजिटल सशक्तिकरण जैसे कार्यक्रम शामिल हैं। केन्द्रीय बजट 2026–27 में भी महिला नेतृत्व और उसके महत्व को दर्शाता है। हालांकि, इन प्रयासों के बावजूद, महिलाओं को अभी भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे लैंगिक असमानता, शिक्षा और कौशल की कमी, आर्थिक संसाधनों तक सीमित पहुँच तथा सामाजिक रूढ़िवादिता। इसलिए यह आवश्यक है कि महिला नेतृत्व को केवल नीतिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर भी सुदृढ किया जाए। इस शोध पत्र का उद्देश्य महिला नेतृत्व और समावेशी विकास के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना है तथा यह समझना है कि किस प्रकार महिलाओं की सक्रिय भागीदारी विकसित भारत के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

'विकसित भारत 2047' का संकल्प मात्र एक परिकल्पना नहीं है, बल्कि आर्थिक सुदृढ़ता, सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और समावेशी भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चार आधार स्तम्भों को स्वीकार करता है।

केन्द्रीय बजट 2026–27 में विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महिला नेतृत्व और समावेशी विकास को महत्वपूर्ण स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 1 फरवरी 2026 को भारतीय संसद में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने केन्द्रीय बजट को प्रस्तुत करते हुए "सबका साथ, सबका विकास" और आत्मनिरीक्षण को 'नारी शक्ति' के रूप में केन्द्र में रखा है।

नारी शक्ति : विकसित भारत की प्रेरणा : बजट 2026 में महिला नेतृत्व को लक्ष्य के रूप में प्रतिबिंबित न कर आर्थिक विकास के इंजन के रूप में देखा गया है। इसके बिन्दुओं को निम्न आधार पर देख सकते हैं :

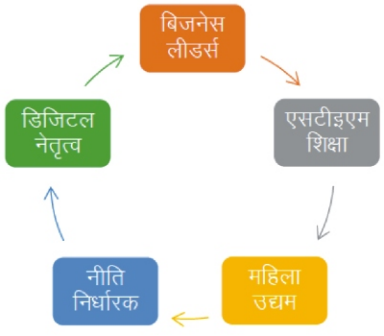

1. **लखपति दीदी से बिजनेस लीर्डस** :– लखपति दीदी योजना की अभूतपूर्व सफलता के बाद, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं को सशक्त करने के लिए सूक्ष्म उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए सामुदायिक आधारित SHE-MARTS (Self-Help Entrepreneur Marts) की स्थापना की बात की गई है। (नीति आयोग, 2025)
   - **सी माट्र्स (SHE-MARTS)** ग्रामीण महिलाओं को कर्ज तक सीमित न रखकर उन्हें बिजनेस मालिक बनाने के लिए SHE-MARTS की घोषणा की गई है। ये माट्र्स ग्रामीण समूह द्वारा संचालित खुदरा विक्रय केन्द्र होंगे। उनका उद्देश्य महिला उद्योगियों के उत्पादों को सीधे बाजार और वैश्विक उपलब्ध कराना है।
   - **लखपति दीदी 2.0** सरकार ने लखपति दीदी योजना का लक्ष्य 3 करोड़ महिलाओं के सशक्तिकरण तक विस्तार किया है। इसका उद्देश्य आधुनिक तकनीकी, ड्रोन संचालन और डिजिटल बैंकिंग में प्रशिक्षण उपलब्ध कराना है। और 2027 तक महिलाओं की वार्षिक आय 1 लाख से अधिक करना है। सरकार ने एक उच्चस्तरीय "Education to Employment and Enterprise" (EEE) ढांचे की सिफारिश की है, इसका मुख्य फोकस AVGC ;एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग और कॉमिक्स सेक्टर में युवाओं को कुशल बनाना है। (वर्ल्ड बैंक, 2024)
2. STEM शिक्षा . STEM (विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित) में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए सरकार ने देश के प्रत्येक जिले में गर्ल्स होस्टल स्थापित करने का प्रस्ताव रखा है, जिसका उद्देश्य इन क्षेत्रों में प्रवेश करना है जो आवास सुविधाओं की कमी के कारण इन विषयों की पढ़ाई को छोड़ने पर मजबूर होती हैं।
3. **महिला उद्यमिता : 'लाभार्थी से मालिक' तक** : इस बजट में महिलाओं को आजीविका निर्भरता से निकालकर उद्यम का मालिक बने के लिए तैयार करना है। इसका उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों को सीधे बाजार तक पहुँच बनाना है। MSME क्षेत्र में महिला उद्यमियों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए 10000 करोड़ का SME ऋण फंड घोषित किया गया। पहली बार उद्योग आरम्भ करने वाली महिलाओं को 2 करोड़ तक के ऋण की सुविधा, नई स्किल इंडिया स्कीम और कस्टमाइज्ड क्रेडिट कार्ड की सुविधा।
4. **नीति निर्माण में आधी आबादी की भागीदारी** केन्द्रीय बजट 2026–27 'नारी शक्ति से राष्ट्र शक्ति' के विजन पर आधारित है, जो महिलाओं को निर्णय लेने वाली और आर्थिक सशक्तिकरण की भूमिका में स्थापित करता है। इस बार जेन्डर बजट को बढ़ाकर .5-01 लाख करोड़, (कुल बजट का 9.3 प्रतिशत) किया गया। महिला नेतृत्व की भूमिका को सुदृढ़ करने के लिए विशेष कौशल कार्यशालाएं, महिला गारंटी लोन स्वावलम्बन मिशन और विभिन्न क्षेत्रों में प्रयास किए जा रहे हैं। (UN Women, 2024)

5. **डिजिटल लीडरशिप** इस बजट में महिलाओं के डिजिटल नेतृत्व को विकसित करना, 2047 की एक सशक्त राष्ट्र निर्माण के रूप में रखा गया है। भारत सरकार नारी शक्ति को डिजिटल अर्थव्यवस्था की रीढ़ और लीडर के रूप में अपना ध्यान केन्द्रित कर रही है। इसके तहत निम्न पहल–
   - डिजिटल उद्यमों और SHE-MARTS हेतु ई–कॉमर्स लिंक स्थापित कर ग्रामीण महिलाओं की सहायता करना।
   - महिलाओं को अपने उत्पादों की डिजिटल मार्केटिंग और ब्रांडिंग का प्रशिक्षण देना।
   - युवतियों में "Code for Rural Health और डिजिटल कौशल प्रशिक्षण के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना।
   - डिजिटल पेमेंट गेटवे, फिनटेक और अन्य क्षेत्रों में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाना।

समावेशी विकासः सबका साथ, सबका विकास' : – बजट 2026 का मुख्य उद्देश्य विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की ओर अग्रसर होना है। इसका फोकस समावेशी विकास, महिला सशक्तिकरण, युवाओं के लिए रोजगार तथा नवाचार को बढ़ावा देना है। बजट 2026 में महिला सशक्तिकरण हेतु कई महत्वपूर्ण योजनाओं की घोषणा की गई है, जिनका उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उनकी आय में वृद्धि करना है। विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध्द–शहरी क्षेत्रों में महिलाओं को स्वरोजगार एवं उद्यमिता के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। सरकार का मानना है कि जब तक समाज के प्रत्येक वर्ग की भागीदारी सुनिश्चित नहीं होगी, तब तक विकसित भारत 2047 का सपना साकार नहीं हो सकता। (भारत सरकार, 2026)

महिला नेतृत्व का प्रभाव

महिला नेतृत्व आधुनिक शासन और विकास प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण आयाम बनकर उभरा है, जो न केवल लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है, बल्कि समावेशी और सतत विकास को भी सुनिश्चित करता है। विभिन्न अध्ययनों और वैश्विक अनुभवों से यह सिद्ध हुआ है कि जहाँ निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी अधिक होती है, वहाँ नीतियाँ अधिक संवेदनशील, प्रभावी, पारदर्शी और जन–केन्द्रित होती हैं।

- **आर्थिक क्षेत्र में प्रभाव** – महिला उद्यमिता और नेतृत्व रोजगार सृजन और आय वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब महिलाएं आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय होती हैं, तो परिवार की आय में वृद्धि होती है और गरीबी में कमी आती है। विशेष रूप से स्वयं सहायता समूह, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के माध्यम से महिलाओं ने स्थानीय स्तर पर आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है।
- **सामाजिक क्षेत्र में प्रभाव** – महिला नेतृत्व शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और लैंगिक न्याय जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देता है। उदाहरण के लिए, पंचायत स्तर पर महिला प्रतिनिधियों द्वारा लिए गए निर्णयों में पेयजल, स्वच्छता और शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं पर अधिक ध्यान दिया है। इससे समाज के कमजोर और वंचित वर्गों को प्रत्यक्ष एवं सुगम लाभ प्राप्त होता है।
- **राजनीतिक और प्रशासनिक प्रभाव** – महिला नेतृत्व पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और सुशासन को मजबूत करता है। कई शोधों में यह पाया गया है कि महिला प्रतिनिधियों के नेतृत्व में भ्रष्टाचार की संभावना अपेक्षाकृत कम होती है और सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग अधिक प्रभावी ढंग से किया जाता है।
- **डिजिटल और नवाचार क्षेत्र में प्रभाव** –डिजिटल लीडरशिप के माध्यम से महिलाएं ई–कॉमर्स, फिनटेक और स्टार्टअप इकोसिस्टम में अपनी भागीदारी बढ़ा रही हैं। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्वतन्त्रता बढ़ती है, बल्कि वे नई तकनीकों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की वाहक भी बन रही हैं। (कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय, 2025)

हालांकि, यह भी ध्यान देना आवश्यक है कि महिला नेतृत्व के प्रभाव को पूर्ण रूप से प्राप्त करने के लिए सामाजिक बाधाओं, डिजिटल विभाजन और संसाधनों की असमानता जैसी चुनौतियों को दूर करना आवश्यक है। अतः स्पष्ट है कि महिला नेतृत्व केवल महिलाओं के विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक – आर्थिक परिवर्तन का माध्यम है, जो विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

आलोचनात्मक विश्लेषण

केन्द्रीय बजट 2026–27 में महिला सशक्तिकरण और नेतृत्व को आर्थिक विकास के केन्द्र में रखने का प्रयास किया गया है, जो एक सकारात्मक और दूरदर्शी पहल है। सरकार द्वारा STEM शिक्षा, डिजिटल लीडरशिप, तथा महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं प्रस्तुत की गई हैं, जो महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। हालांकि, इन योजनाओं की सफलता मुख्यतः उनके प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। भारत जैसे विभिन्न देश में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संसाधनों की असमानता, डिजिटल विभाजन, तथा जागरूकता की कमी जैसी समस्याएं इन योजनाओं के प्रभाव को सीमित कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, कई बार नीतियाँ केवल कागजों तक सीमित रह जाती हैं और उनका वास्तविक लाभ लक्ष्य वर्ग तक नहीं पहुँच पाता। उदाहरण के लिए, स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और MSMEs के लिए घोषित योजनाओं का लाभ सभी महिलाओं तक समान रूप से नहीं पहुँच पाता। (भारतीय रिजर्व बैंक, 2025)

अतः यह आवश्यक है कि सरकार केवल नीतियों के निर्माण तक सीमित न रहे, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन पर भी विशेष ध्यान दे। तभी महिला नेतृत्व और सशक्तिकरण के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

चुनौतियाँ

- महिला सशक्तिकरण और नेतृत्व के विकास में कई संरचनात्मक और सामाजिक बाधाएं विद्यमान हैं। सबसे बड़ी चुनौती पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था है, जो महिलाओं की स्वतन्त्रता और निर्णय लेने की क्षमता को सीमित करती है।
- इसके अतिरिक्त, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और कौशल की कमी महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने से रोकती है।
- कई महिलाएं अभी भी उच्च शिक्षा और तकनीकी प्रशिक्षण से वंचित रह जाती हैं, जिसके कारण वे रोजगार और उद्यमिता के अवसरों का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाती हैं।
- वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुँच भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। महिलाएं आसानी से ऋण प्राप्त नहीं कर पाती हैं, जिसके कारण वे अपने उद्यम शुरू करने में कठिनाई का सामना करती हैं।
- डिजिटल साक्षरता की कमी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है, विशेषकर तब जब सरकार डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे रही है।
- ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में कई महिलाएं डिजिटल तकनीकी और इंटरनेट के उपयोग से अभी भी अनभिज्ञ हैं।

इस प्रकार, इन सभी चुनौतियों का समाधान किए बिना महिला नेतृत्व को पूर्ण रूप से सशक्त बनाना कठिन है।

सुझाव

महिला सशक्तिकरण और नेतृत्व को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक है कि सरकार और समाज दोनों मिलकर प्रयास करें। सबसे पहले, महिलाओं के लिए डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का विस्तार किया जाना चाहिए, ताकि वे डिजिटल अर्थव्यवस्था में सक्रिय भागीदारी कर सके। स्वयं सहायता समूहों को सीधे बाजार से जोड़ने के लिए मजबूत ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म विकसित किए जाने चाहिए। इसके साथ ही, महिलाओं को आसान और सुगम ऋण सुविधा प्रदान करने के लिए बैंकिंग प्रक्रियाएं सरल बनाई जानी चाहिए। सरकार को जेन्डर बजट के प्रभावी क्रियान्वयन और निगरानी के लिए एक मजबूत तन्त्र विकसित करना चाहिए। साथ ही, ग्रामीण महिलाओं के लिए विशेष कौशल विकास कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सके। महिलाओं के लिए विशेष नवीनता और स्टार्टअप प्रोत्साहन योजनाएं शुरू की जानी चाहिए। इससे महिलाएं नए व्यवसाय शुरू कर सकें और आत्मनिर्भर बन सके। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में महिलाओं के लिए मोबाइल प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए जाने चाहिए। ताकि वे तकनीकी और व्यावसायिक कौशल सीख सके। महिलाओं के लिए कार्यस्थल पर सुरक्षित और अनुकूल वातावरण सुनिश्चित करने के लिए कड़े कानून और उनका सख्ती से पालन किया जाना चाहिए। महिला उद्यमियों को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार से जोड़ने के लिए निर्यात प्रोत्साहन नीतियों में विशेष प्रावधान किए जाने चाहिए। स्कूल और कॉलेज स्तर पर लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण से संबंधित शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। ताकि शुरूआत से ही सकारात्मक सोच का विकास हो। महिलाओं के लिए मेन्टरशिप और नेटवर्क विकसित किए जाने चाहिए। जिससे वे अनुभवी लोगों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें।

निष्कर्ष

केन्द्रीय बजट 2026–27 में महिला नेतृत्व और सशक्तिकरण को प्राथमिकता देकर भारत के समावेशी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। नारी शक्ति से राष्ट्र शक्ति का दृष्टिकोण केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक विकास मॉडल के रूप में उभर रहा है। यदि इन नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए और सामाजिक बाधाओं को दूर किया जाए, तो महिलाएं न केवल आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगी, बल्कि एक सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में भी केन्द्रीय भूमिका निभाएंगी। महिला नेतृत्व और सशक्तिकरण आधुनिक भारत के समावेशी और सतत विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। केन्द्रीय बजट 2026–27 में प्रस्तुत विभिन्न योजनाएं और पहलें इस दिशा में एक सकारात्मक प्रयास हैं, जो महिलाओं को आर्थिक, सामाजिक और डिजिटल रूप से सशक्त बनाने का कार्य करती हैं। तथापि, केवल नीति निर्माण से ही इसके लक्ष्यों की पूर्ति संभव नहीं है, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन पर भी समान रूप से ध्यान देना आवश्यक है। जब तक समाज में विद्यमान लैंगिक असमानता, शिक्षा और संसाधनों की कमी जैसी समस्याएं दूर नहीं होती, तब तक महिला सशक्तिकरण का पूर्ण प्रभाव देखने को नहीं मिलेगा। अतः यह आवश्यक है कि सरकार, निजी क्षेत्र और समाज सभी मिलकर एक समन्वयित प्रयास करें, ताकि महिलाओं को समान अवसर, संसाधन और निर्णय लेने की स्वतन्त्रता प्राप्त हो। इस प्रकार, महिला नेतृत्व केवल एक सामाजिक आवश्यकता नहीं, बल्कि एक आर्थिक और राष्ट्रीय विकास की आवश्यकता भी है, जो विकसित भारत 2047 के सपने को साकार करने में निर्णायक भूमिका निभाएगा।

सन्दर्भ सूची

भारत सरकार (2026). केन्द्रीय बजट 2026–27. वित्त मंत्रालय।

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (2025). वार्षिक रिपोर्ट 2024–25. भारत सरकार।

नीति आयोग(2025). भारत में महिला सशक्तिकरण : प्रगति और चुनौतियाँ. भारत सरकार।

वर्ल्ड बैंक (2024). महिलाए व्यवसाय और विधि 2024. वर्ल्ड बैंक पब्लिकेशन

UN Women (2024)- Gender equality and women's empowerment report- United Nations

भारत सरकार (2026). Economic Survey 2025–26. वित्त मंत्रालय।

कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (2025). Skill development report- भारत सरकार।

भारतीय रिजर्व बैंक (2025). Financial inclusion report- RBI Publications